Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 2027–2031

UTILITY OF MOTHER TONGUE TEACHING AT PRIMARY LEVEL

प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण की उपादेयता

Javed Khan [1]

[1] Assistant Professor (Contract), Teacher Training and Involuntary Education (IASE), Jamia Millia Islamia, New Delhi, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.5928

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The importance, purpose and teaching of mother tongue teaching have been mentioned in the presented research article. Along with this, the role of the teacher in making mother tongue teaching simple and easy has also been described. This research article highlights the need and utility of mother tongue teaching in the present times. Suggestions related to mother tongue have also been mentioned in the research article given in the New Education Policy-2020. Community and provisions related to mother tongue have been mentioned in the mentioned manner.

Hindi: प्रस्तुत शोध आलेख में मातृभाषा शिक्षण के महत्व, उद्देश्य तथा शिक्षण विधियों का उल्लेख किया गया है। इनके साथ ही साथ अध्यापक के द्वारा मातृभाषा शिक्षण को सरल तथा सुगम बनाने के लिए उसकी भूमिका का भी वर्णन किया गया है । यह शोधलेख वर्तमान समय में मातृभाषा शिक्षण की आवश्यकता तथा उपादेयता पर उचित प्रकार से प्रकाश डालता है। नयी शिक्षा नीति- 2020 में दिए गए मातृभाषा संबंधित सुझावों का भी शोधलेख में उचित प्रकार से उल्लेख किया गया है। मातृभाषा सम्बंधित नीतियों एवं उपबंधों का उल्लेख उचित प्रकार से किया गया है।

Keywords: Mother Tongue, Teaching, मातृभाषा, शिक्षण

1. प्रस्तावना

शिक्षा में मातृभाषा की उपादेयता अमूल्य है क्योंकि यह संज्ञानात्मक विकास, प्रभावी संचार और सांस्कृतिक पहचान के लिए आधारशिला के रूप में कार्य करती है। मातृभाषा के शिक्षण से छात्रों की वैचारिक क्षमता में वृद्धि होती है, जटिल विषयों की गहरी समझ का विकास होता है और आलोचनात्मक कौशलों को बढ़ावा मिलता है। मातृभाषा से भावनात्मक जुड़ाव सांस्कृतिक विरासत में गर्व की भावना को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, मातृभाषा शिक्षण भाषाई विविधता में योगदान देता है तथा भाषाओं में एक सहज परिवर्तन सुनिश्चित होता है। एक मजबूत आधार प्रदान करके, मातृभाषा न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन में उन्नयन करती है, बल्कि सांस्कृतिक और भाषाई परंपराओं की समृद्धि को भी संरक्षित करती है।

जन्म से हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं वही हमारी मातृभाषा होती है। सभी संस्कार एवं व्यवहार हम इसी के द्वारा प्राप्त करते हैं। इसी भाषा से हम अपनी संस्कृति के साथ जुड़कर उसकी धरोहर को आगे बढ़ाते हैं। मातृभाषा एक ऐसी भाषा है जिसे व्यक्ति ने जन्म से शैश्यवस्था तक सीखा हो और धारा प्रवाह बोलता हो। यह वह भाषा है जो किसी व्यक्ति की संस्कृति और जातीय पहचान के साथ सबसे अधिक निकटता से जुड़ी होती है और अक्सर उनके परिवार समुदाय और रोजमर्रा की जिंदगी में संचार के प्राथमिक साधन के रूप में कार्य करती है। प्राथमिक शिक्षा का छात्र के जीवन में वही स्थान है जो मां का है। प्राथमिक शिक्षा जीवन की वह अवस्था है जिसमे जीवन के विकास क्रम को गति मिलती है। बच्चों का शारीरिक, मांसपेशीय, संज्ञानात्मक, बौद्धिक, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति और सौंदर्य बोध का विकास प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। ऐसे में ज़रूरी है कि बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में दी जाये। गांधी जी ने 25 अगस्त 1946 की हरिजन पत्रिका में लिखा था कि "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितनी कि बच्चों के विकास के लिए माता का दूध । बालक पहला पाठ अपनी माता से ही पढता है इसलिए

उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा थोपना में मातृभूमि के विरुद्ध पाप समझता हूं" (जीत, भाई योगेंद्र,2016 हिंदी भाषण शिक्षण), वही एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं कि "आज यदि मैं एक निरंकुश शासन की शक्तियों से संयुक्त होता तो आज ही विदेशी माध्यम के द्वारा पढ़ाई बंद करा देता।" (स्वराज्य, 1909) शिक्षा का अंतिम लक्ष्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना है । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का सहारा लिया जा सकता है, जिनकी सफलता इस बात पर निर्भर होती है कि क्या बालक शिक्षक की बात समझ रहा है या नहीं, बालक जितना शिक्षक की बात समझेगा उतना उसका स्वाभाविक विकास होगा तथा वह मानसिक रूप से विकसित होगा । यदि हम प्राथमिक स्तर पर बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करेंगे तो बच्चा अत्यंत सरलता से सीख सकेगा। प्राथमिक स्तर पर हमारे देश में बच्चे को एक ऐसी भाषा (अंग्रेजी) में शिक्षा दी जा रही है जो समाज के एक विशेष वर्ग तक ही सीमित है जो जन सामान्य की भाषा नहीं है। भारत में प्रमुख रूप से बोली जाने वाली मातृ भाषाएं जिसमे हिंदी, मराठी, बांग्ला, गुजराती, तमिल, तेलुगू, असमिया, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम, सिंधी, उड़िया और उर्दू भाषा आदि प्रमुख मातृ भाषाएं हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में इस प्रकार देख सकते हैं कि- 'जब तक मातृभाषा को उच्च शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जायेगा, तब तक पाठ्य-पुस्तकें कैसे लिखी जाएँगी, नई शब्दावली कैसे बनेगी ? भाषा का विकास उसके प्रयोग से ही होता है।"" (जीत, भाई योगेंद्र,2016 हिंदी भाषण शिक्षण)

डॉ० ऐनी बेसेण्ट के अनुसार -"मातृभाषा द्वारा शिक्षण के अभाव ने भारत को निश्चय ही, विश्व के सभ्य देशों में, अत्यन्त अज्ञानी बना दिया है। यहाँ उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की संख्या काई भर है और अशिक्षितों की अपार जल-राशि।" इसलिए श्रीमती बेसेंट ने प्राथमिक स्तर की शिक्षा हेतु मातृभाषा को ही प्राथमिकता दी थी।" (जीत, भाई योगेंद्र,2016 हिंदी भाषण शिक्षण)

2. नीतिगत विश्लेषण

संस्कृति के संरक्षण में भाषा के बाद दूसरा स्थान शिक्षा का है। हमारे देश में शिक्षा मुख्यतः तीन स्तरों पर प्रदान की जाती है यथा प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा। इसमें कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षाऔर कक्षा 5 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा कहते हैं । प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की नींव माना जाता है। हमारे संविधान के अनुसार अनुच्छेद 350 (क) में घोषणा की गई है कि प्रत्येक राज्य और प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वह भाषाई दृष्टि से अल्पसंख्यकों के बच्चों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा की समुचित सुविधाएं उपलब्ध कराये। स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन 1964-66) ने भी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की सिफारिश की हालांकि मातृभाषा में आयोग का तात्पर्य क्षेत्रीय भाषा से था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की बात कही। वर्ष 2000 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में प्राथमिक स्तर पर अन्य विषयों के साथ केवल एक भाषा/मातृभाषा/ क्षेत्रीय भाषा को स्थान दिया गया। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में यह भी कहा गया है कि "जहां तक संभव हो, स्कूल में शिक्षा का माध्यम बच्चे की मातृभाषा होनी चाहिए"। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2022 ने सिफारिश की है कि "आठ साल की उम्र तक के बच्चों के लिए शिक्षा का प्राथमिक माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए"।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा में भी स्थानीय भाषा को महत्वपूर्ण स्थान देती है- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के पैरा 9.3 (क) के अनुसार "ऐसी उच्चतर शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ना जिसमें विशाल बहु-विषयक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हों, जहाँ प्रत्येक जिले में या उसके पास कम से कम एक और पूरे भारत में अधिकतर उच्च शिक्षा संस्थान ऐसे ही हो, जो स्थानीय / भारतीय भाषाओं में शिक्षा या कार्यक्रमों का माध्यम प्रदान करते हो"।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच का विचार प्रस्तुत करती है और प्री-स्कूल से माध्यमिक तक सभी स्तरों पर स्कूली शिक्षा के लिए एक रचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाने की पहल करती है जिससे ड्रॉप आउट दर को कम किया जा सके और 2030 तक 100% सकल नामांकन दर प्राप्त कि जा सके। 100% सकल नामांकन दर को प्राप्त करने के लिए बहुभाषावाद या त्रि-भाषा सूत्र को स्वीकार करना अतिआवश्यक है, क्योंकि मातृभाषा छात्र के विद्या अर्जन करने में सहायक सिद्ध होती है।

3. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण का महत्व

मातृभाषा में ही हमारी संस्कृति का इतिहास निहित रहता है उसके द्वारा हम अपने घर, जाति और उन भाषा-भाषियों से एक सूत्र में बंध जाते हैं इस दृष्टि से इसके प्रमुख महत्व हैं

- अभिव्यक्ति का सरलतम माध्यम: मातृभूमि के समान भाषा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार होती है। वह अपने विचार जितनी सुगमता के साथ अपनी मातृभाषा में व्यक्त कर सकते हैं उतनी सुगमता से किसी अन्य भाषा में नहीं।
- अध्ययन की आधारशिला: मातृभाषा विचार विनिमय का सरलतम साधन होती है इसलिए इसे शिक्षा का माध्यम बनाया जाता है शिक्षा का माध्यम होने के कारण यह अन्य भाषाओं और समस्त ज्ञान विज्ञान के अध्ययन की आधारशिला होती है।

- बच्चों के विकास का प्रमुख साधन: बच्चों की अभिव्यक्ति के विकास में सबसे अधिक उत्तरदायित्व मातृभाषा और उसके साहित्य का होता है। किसी भी देश में किसी भी काल में कोई भी विचारधारा क्यों ना रही हो पर सभी ने शिक्षा द्वारा बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास करना आवश्यक समझा है। मातृभाषा और उसके साहित्य के अध्ययन से इन सब उद्देश्यों की प्राप्ति में सरलता मिलती है।
- बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास: मानसिक विकास के लिए सबसे पहली आवश्यकता विचार शक्ति की होती है जो विचार तथा भाषा को जन्म देती हैं।
- चारित्रिक एवं नैतिक विकास: माताएं बच्चों को रोचक व नैतिक कहानियां सुनाती हैं और आगे चलकर बच्चे भाषा की पुस्तकों में भी इसी प्रकार के लेख, कहानी, नाटक और कविताएं आदि पढ़ते हैं। जिससे उनके चरित्र का निर्माण होता है इस प्रकार मातृभाषा और उसके साहित्य के अध्ययन से बच्चों का चारित्रिक एवं नैतिक विकास भी होता है।

प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए और इस स्तर पर विषय बोझ ना हो इसके लिए केवल मातृभाषा ही होनी चाहिए।

Former President A P J Abdul Kalam said "I studied up to tenth standard through vernacular medium and later picked up English." And favour that science education should be imparted to children in vernacular languages to bring creativity and enable easy grasp of the subject (the Indian express,20 January 201,)

4. हिंदी अनुवाद

पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था, "मैंने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई स्थानीय माध्यम से की और बाद में अंग्रेजी सीखी।" और इस बात का समर्थन करते हैं कि बच्चों में रचनात्मकता लाने और विषय को आसानी से समझने के लिए विज्ञान की शिक्षा स्थानीय भाषाओं में दी जानी चाहिए।

रविंद्र नाथ टैगोर ने कहा था कि "यदि विज्ञान को सुलभ बनाना है तो मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए"

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने तो यहां तक कहा है कि

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

5. मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं

- बालक अथवा छात्र को अपनी मातृभाषा के अन्य लोगों द्वारा प्रस्तुत भाव एवं विचारों आदि को पूर्ण रूप में समझने के योग्य बनाना।
- छात्र को अपने भावों एवं विचारों आदि को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना।
- छात्रों को भाषा के विभिन्न रूपों से परिचित कराना।
- छात्रों में समझ के साथ पठन-पाठन की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों को मातृभाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक प्रथा आदि से परिचित कराना।
- छात्रों के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना।
- छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि करना।
- छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करना।
- छात्रों को इस योग्य बनाना कि वह दूसरों की भाषा को समझ सकें वह स्वयं मातृभाषा का प्रभावी रूप से प्रयोग कर सकें।

6. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण विधियां

मातृभाषा शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली विधियां निम्नलिखित हैं

1) अनुकरण विधि: इस विधि में विद्यार्थी अपने शिक्षक का अनुकरण करके भाषा के कौशलों का विकास करता है। इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी के लेखन तथा वाचन में स्पष्टस्ता आती है। इस विधि के द्वारा एक छात्र पढ़ना-लिखना अच्छे से उच्चारण करना सीखता है।

यह निम्नलिखित भागों में विभाजित है

- लिखित अनुकरण: लिखित अनुकरण में छात्र रूपरेखा लेखन के माध्यम से अक्षरों की आकृति बनाना सीखते हैं।
- स्वतंत्र लेखन: इसमें अध्यापक श्यामपट्ट पर पूरा शब्द लिखता है और विद्यार्थी अपने अध्यापक का अनुकरण करते हैं और स्वयं इसी प्रकार के अक्षर लिखते हैं यह मुख्य रूप से प्राथमिक स्तर हेतु उपयोग में लाई जाती है।
- उच्चारण अनुकरण: अध्यापक बोल-बोलकर शब्दों का उच्चारण विद्यार्थियों को सिखाता है और विद्यार्थी उच्चारण का अनुकरण कर उन शब्दों को बोलना सीखते हैं।
- रचना अनुकरण: इसके द्वारा छात्र भाषा शैली पर आधारित रचनाओं के बारे में लिखना सीखता है। इसमें छात्र को अभ्यास करने हेतु कोई कविता या लेख लिखने हेतु दिशा निर्देश दिए जाते हैं। यह विधि माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

2) मारिया मांटेसरी विधि: मारिया मांटेसरी इटली की एक चिकित्सक तथा शिक्षा शास्त्री थीं जिनके नाम से शिक्षा की मांटेसरी पद्धति प्रसिद्ध है यह पद्धति आज भी विद्यालय में प्रचलित है यह ढाई वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों हेतु प्रयोग में लाई जाती है।

इस विधि में छात्रों को व्यंजनों से लिखा हुआ एक लकड़ी का चार्ट दिया जाता है जिस पर व्यंजन अंकित होते हैं छात्र उन व्यंजनों पर उंगलियां फेर के तथा बाद में पेंसिल फेर मातृभाषा लेखन सीखता है।

3) प्रत्यक्ष विधि: प्रत्यक्ष विधि के अंतर्गत वार्तालाप, मौखिक कार्य एवं बोलने के अभ्यास की ओर अधिक जोर दिया जाता है। इस पद्धति में भाषा को स्वतंत्र रूप से पढ़ाया जाता है। प्रत्यक्ष विधि में आदेश निर्देश आदि दिए जाते हैं और उसी में विचारों की अभिव्यक्ति का प्रयास किया जाता है। इस विधि के माध्यम से सीमित शब्दावली का ही ज्ञान दिया जा सकता है।

4) परोक्ष विधि: इस विधि में मातृभाषा के माध्यम से किसी नवीन भाषा को पढ़ाया जाता है इस विधि में निम्नलिखित नियमों को ध्यान में रखा जाता है

- प्रत्येक वाक्य का शब्द मातृभाषा में अनुवादित करके पढ़ाया जाता है।
- पाठ्य पुस्तकों की रचना व्याकरण के आधार पर ही की जाती है तथा संपूर्ण व्याकरण का अनुवाद कर लिया जाता है।
- इस विधि के माध्यम से नवीन शब्द और मुहावरे उचित प्रकार से समझाएं जाते है।
- अनुवाद का माध्यम मातृभाषा को ही रखा जाता है।

5) निगमनात्मक तथा आगमनात्मक: पाठ्य विषय को दो प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है एक में छात्रों को कोई सामान्य सिद्धांत बताकर उसकी जांच या पुष्टि के लिए अनेक उदाहरण दिए जाते हैं, तथा दूसरे में पहले अनेक उदाहरण देकर छात्रों से कोई सामान्य नियम निकलवाया जाता है। पहली विधि को निगमनात्मक विधि और दूसरी को आगमनात्मक विधि कहते हैं। यह विधि मातृभाषा के व्याकरण शिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

6) संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियां: मातृभाषा शिक्षण के दो अन्य प्रकार भी हो सकते हैं। पहला यदि पाठ्यवस्तु को उपस्थित करने का तरीका यदि ऐसा है कि पहले अंशो का ज्ञान देकर तब पूर्ण वस्तु का ज्ञान कराया जाता है तो उसे संश्लेषणात्मक विधि कहते हैं जैसे हिंदी पढ़ने में पहले वर्णमाला सीखकर तब शब्दों का ज्ञान कराया जाता है तत्पश्चात शब्दों से वाक्य बनाए जाते हैं परंतु यदि पहले वाक्य सीखाकर तब शब्द और अंत में वर्ण सिखाए जाए तो यह विश्लेषणात्मक विधि कहलाएगी क्योंकि इसमें पूर्ण से अंश की ओर चलते हैं।

7. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण में अध्यापक की भूमिका

- मातृभाषा की शिक्षा देना: माता के बाद बच्चा मातृभाषा की शिक्षा अध्यापक से प्राप्त करता है तथा अध्यापक का उत्तरदायित्व है कि वह प्राथमिक स्तर की शिक्षा बच्चों को उनकी मातृभाषा में प्रदान करें जिससे विद्यार्थी प्रारंभिक शिक्षा के साथ तारतम्य स्थापित कर सके।
- सरल सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए: शिक्षण सरल तथा सुगम बनाने के लिए अध्यापक को सहायक शिक्षक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए जिसमें लोककथा, लोकगीत, लोक चित्रकला तथा मल्टीमीडिया का प्रयोग करके अध्यापक मातृभाषा शिक्षण को सरल बना सकता है।
- उच्चारण संशोधन करना: प्राथमिक स्तर पर अध्यापक का मुख्य कार्य विद्यार्थी के मातृभाषा उच्चारण को उचित विधियों के माध्यम से संशोधित करना होता है।
- छात्रों को सामाजिक क्रियाकलापों में प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित करना: विद्यार्थी अपनी मातृभाषा समाज के सानिध्य में आकर सीखता है इसलिए अध्यापक को सामाजिक क्रियाकलापों में प्रतिभाग करने के छात्रों को लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

- मातृभाषा में पाठ्यक्रम का सृजन करना: अध्यापक पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों की मातृभाषा में सृजित कर बच्चों को प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा सीखने में सहायता कर सकता है।
- भाषा अभिव्यक्ति के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करें ।
- छात्रों के कक्षा शिक्षण को उनके परिवेश तथा व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत करे।

8. उपसंहार

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर 1 से 5 तक मातृभाषा शिक्षण का अत्यधिक महत्व है जिसके माध्यम से बच्चा अपने विचारों को मूर्त रूप प्रदान करता है तथा अभिव्यक्त कर पता है। मातृभाषा का शिक्षण करते समय अध्यापक का यह का उत्तरदायित्व है कि वह उनके द्वारा बोली गई मातृभाषा की त्रुटियों को पहचान कर उन्हें शुद्ध रूप प्रदान करें तथा मातृभाषा के प्रति उनके मन में आदर भाव व सत्कार तथा सम्मान की भावना का विकास करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं नए भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ विश्वविद्यालयों में मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कैसे तकनीकी विषयों को भी हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में पढ़ना शुरू कर दिया है । पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुरूप मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करवाना एक बड़ी चुनौती होगी किंतु संकल्प से उसमें भी सफलता मिलेगी मातृभाषा में वह शक्ति है जिसके सहारे बालक नैसर्गिक रूप से ज्ञानात्मक और विकासात्मक अवस्थाओं तक आसानी से पहुंच सकता है।

सन्दर्भ

चक्रवर्ती, विद्युत(2006)। महात्मा गांधी के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार । रूटलेज, टेलर और फ्रांसिस। पृ. 116-129. आईएसबीएन 978-0-415-36096-8.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा), भारत सरकार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा), भारत सरकार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा), भारत सरकार

डॉ. विनीता गुप्ता(२०१५) वर्तमान शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में डा० एनी बेसेंट के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च (वॉल्यूम 5, नंबर 1) जनवरी 2015

जीत, भाई योगेंद्र,(2016) हिंदी भाषण शिक्षण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा २ (पृष्ठ संख्या 124-125)

बख्शी, आर. (2022)। शिक्षा के प्रारंभिक चरणों के दौरान मातृभाषा की वकालत: भारत में एनईपी (2020) को अनुकूलित करने के लिए आगे का रास्ता। न्यूरोक्वांटोलॉजी, 20(13), 454।

निशांति, आर. (2020)। मातृभाषा सीखने के महत्व को समझना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 5(1), 77-80।

मातृभाषा में दें विज्ञान की शिक्षा : कलाम (2011, 20 जनवरी)। इंडियन एक्सप्रेस. https://indianexpress.com/article/news-archive/web/imparting-science-education-in-mother-tongue-kalam/

चावला सुरभि (2022). मातृभाषा और शिक्षा तर्क एवं चुनोतियाँ, प्राथमिक शिक्षक एनसीईआरटी, नई दिल्ली (P79-84)